

---

# Parabrahma Ashtakam

परब्रह्माष्टकम्

## Document Information

---

Text title : Parabrahma Ashtakam

File name : parabrahmAShTakam.itx

Category : deities\_misc, aShTaka, brahma

Location : doc\_deities\_misc

Transliterated by : Durga Sharma

Proofread by : Durga Sharma

Latest update : June 17, 2026

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 17, 2026

*sanskritdocuments.org*

---

परब्रह्माष्टकम्

---




अशब्दरूपगन्धं यदगोत्रं जातिवर्जितम् ।  
अचिन्त्यमद्वयं तत्त्वं तद्ब्रह्म मे सदा भातु ॥ १ ॥  
न देशकालबद्धं यन्न शून्यं नापि पूरितम् ।  
अवाच्यं विमलं ज्योतिस्तद्ब्रह्म मे सदा भातु ॥ २ ॥  
न बन्धो नापि मोक्षोऽस्ति न कर्ता नापि भोक्तृ च ।  
अनाद्यव्यक्तमेकं तत् तद्ब्रह्म मे सदा भातु ॥ ३ ॥  
यस्मिन् विलीयते विश्वं तैलं वह्नौ यथा स्फुटम् ।  
जगन्मातृपरं बीजं तद्ब्रह्म मे सदा भातु ॥ ४ ॥  
सहस्रवक्त्रैरप्राप्यं सुरसिद्धैरगोचरम् ।  
अतर्क्यं स्वात्मसंवैद्यं तद्ब्रह्म मे सदा भातु ॥ ५ ॥  
न वेदैर्न च शास्त्रैश्च न साङ्ख्येन न योगतः ।  
स्वतःसिद्धं महासूक्ष्मं तद्ब्रह्म मे सदा भातु ॥ ६ ॥  
काष्ठे वह्निर्यथा गुप्तो दीपे दीप्तिर्यथा स्थिता ।  
तथा सर्वगतं शान्तं तद्ब्रह्म मे सदा भातु ॥ ७ ॥  
न सूर्यचन्द्रताराणां प्रकाशो यत्र विद्यते ।  
स्वयञ्ज्योतिः परं धाम तद्ब्रह्म मे सदा भातु ॥ ८ ॥  
इति परब्रह्माष्टकं सम्पूर्णम् ।

Encoded and proofread by Durga Sharma

---

pdf was typeset on June 17, 2026

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

